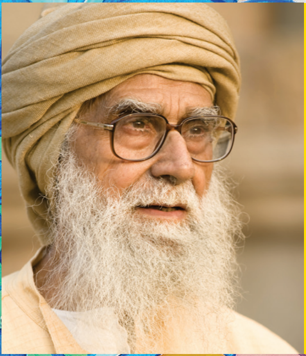

इंसान अपने आपको पहचान

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

इंसान अपने आपको पहचान

लेखक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

संपादक

मोहम्मद आरिफ़

Goodword Books

First published 2019
This edition published 2024
This book is copyright free

This book is the Hindi translation of Maulana Wahiduddin Khan's Urdu booklet entitled *Insaan Apne Apko Pahchaan*.

Goodword Books
A-21, Sector 4, Noida-201301, Delhi NCR, India
Tel. +91 120 4131448, Mob. +91 8588822672
email: info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

CPS International
Centre for Peace and Spirituality International
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110 013, India
Mob. +91-9999944119
e-mail: info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Center for Peace and Spirituality USA
2665 Byberry Road, Bensalem, PA 19020, USA
Cell: 617-960-7156
email: kkaleemuddin@gmail.com

Printed in India

विषय-सूची

सबसे बड़ी समस्या 5

मृत्यु के पश्चात का जीवन 14

दूसरा संसार 23

अंतिम शब्द... 30

भूमिका

यह एक बड़ी वास्तविकता है कि किसी भी प्रयोगशाला में ज़िंदा इंसान नहीं बनाया जा सकता है। हालाँकि शरीर का चित्रण किया जा सकता है। यह तो पता चल चुका है कि जीवित शरीर के अंग बिल्कुल साधारण प्रकार के परमाणु होते हैं। उसमें कार्बन वही है, जो हम कालिख में देखते हैं। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन वही है, जो पानी का मूल रूप है। नाइट्रोजन वही है, जिससे वायुमंडल का अधिकतर भाग बना है। इसी प्रकार अन्य चीज़ें हैं, लेकिन क्या एक ज़िंदा इंसान एटमों का एक विशेष समूह है, जो किसी असाधारण ढंग से आयोजित कर दिया गया है या इसके अलावा कुछ और है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि हम यह जानते हैं कि इंसान का शरीर अमुक भौतिक तत्वों से मिलकर बना है, लेकिन भौतिक तत्वों को एकत्र करके हम जीवन उत्पन्न नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो एक ज़िंदा इंसान का शरीर केवल निर्जीव एटमों का समूह नहीं है, बल्कि वह एटम और जीवन दोनों है। मरने के बाद परमाणुओं का समूह तो हमारे सामने उपस्थित रहता है, जबकि जीवन उससे निकलकर दूसरी संसार में चला जाता है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

सबसे बड़ी समस्या

अगर कहीं किसी जगह यह प्रश्न उठाया जाए कि आज इंसान की सबसे बड़ी समस्या क्या है तो इस पर अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राय होगी। अगर हम देखें तो किसी के अनुसार परमाणु हथियारों पर रोकथाम करना ही आज की बहुत बड़ी समस्या है, तो कोई संसार की बढ़ती हुई आबादी को आज की मूलभूत समस्या कहेगा, जबकि किसी और के अनुसार आज के दौर में होने वाली पैदावार और उसको सही ढंग से वितरित करना बड़ी समस्या है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि इस मुद्दे पर हमें अलग-अलग लोगों की अलग-अलग राय जानने को मिलेगी।

इस विषय पर विस्तार से अध्ययन करने के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इंसान अपने अस्तित्व को नहीं जान पाया। अगर वह अपने आपको पहचानता तो सबकी राय एक ही होती और वह कहता कि आज इंसान की सबसे बड़ी मूलभूत समस्या यह है कि इंसान अपनी वास्तविकता को भूल गया है। वह इस सच्चाई से अनजान है कि उसे एक दिन मरना है और मरने के बाद अपने रचयिता के पास हिसाब-किताब के लिए प्रस्तुत होना है। इस प्रकार अगर हम जीवन की वास्तविकता को अच्छी तरह समझ लें तो हम

आज के संसार को नहीं, बल्कि आख़िरत[1] को मूल समस्या का नाम देंगे।

वर्तमान संसार के अधिकतर लोग ईश्वर और परलोक पर विश्वास करते हैं। ऐसा नहीं है कि वे इससे सहमत नहीं, लेकिन उनके दैनिक जीवन और आचरण से कहीं नहीं झलकता कि वे इसे व्यवहार में लाते हों, जबकि इस दौर के इंसान का उद्देश्य केवल यही है कि वह अपने वर्तमान जीवन को किस प्रकार सफल बनाए। अगर हमारे वैज्ञानिक किसी दिन यह घोषणा कर दें कि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति समाप्त हो गई है और वह 6 हज़ार मील प्रति घंटे की गति से सूर्य की ओर निरंतर बढ़ रही है, तो संपूर्ण संसार में हाहाकार मच जाएगा, क्योंकि इस प्रकार की सूचना का अर्थ है चंद घंटों में पृथ्वी पर बसे लोगों की मृत्यु। हालाँकि यह संसार हर पल उससे भी अधिक बड़े ख़तरे में उलझा हुआ है।

यह ख़तरा क्या है? यह ख़तरा क़यामत[2] का ख़तरा है, जो धरती और आकाश की रचना के दिन से ही उसके लिए तय हो चुका है। जिसकी ओर हम तेज़ी से बढ़े चले जा रहे हैं। वैसे देखा जाए तो इस नियम की सच्चाई के बारे में लगभग सभी लोग जानते हैं, लेकिन

---

[1] परलोक, मृत्यु के पश्चात परिणाम की जगह

[2] जिस दिन सृष्टि समाप्त होगी

वास्तव में इस बारे में गंभीरता से सोच-विचार करने वालों की संख्या कम है।

अगर आप शाम के समय किसी भरे हुए बाज़ार में खड़े हो जाएँ और वहाँ की चहल-पहल को देखें कि लोग किसलिए भाग-दौड़ कर रहे हैं तो आपके सामने यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि आज का इंसान किसको अपना उद्देश्य बनाए हुए है।

ज़रा सोचिए कि भरे बाज़ार में बसों और कारों का आना-जाना किसलिए हो रहा है, दुकानदारों ने अपनी दुकानें किसलिए सजाई हुई हैं, इंसानों की भीड़ कहाँ आती-जाती दिखाई देती है, लोगों की बातचीत का विषय क्या है और एक-दूसरे से मुलाक़ात किस उद्देश्य से हो रही है, किन चीज़ों में लोग रुचि ले रहे हैं और उनकी योग्यता का झुकाव किस ओर है और जेबों के रुपये किन-किन चीज़ों पर ख़र्च हो रहे हैं। जो ख़ुश ख़ुश हैं, वे क्या पाकर ख़ुश हैं और जो निराश हैं, उन्हें किस चीज़ की कमी ने निराश कर दिया है। लोग अपने घरों से क्या पाने की कामना लेकर निकलते हैं और क्या लेकर वापस जाना चाहते हैं?

इन तथ्यों के आधार पर अगर आप लोगों की बातचीत के विषय और उनके रहन-सहन के ढंग पर सोच-विचार करें तो आपको यह स्पष्ट हो जाएगा कि आज इंसान क्या प्राप्त करना चाहता है।

वास्तविकता यह है कि बाज़ारों की चहल-पहल और भरी सड़कों पर लोगों की लगातार आवाजाही पुकार-पुकारकर कह रही है

कि आज का इंसान अपनी इच्छाओं के पीछे दौड़ रहा है। वह परलोक को नहीं, बल्कि केवल आज के संसार को ही प्राप्त करना चाहता है। अगर उसकी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति हो रही है तो वह बहुत ख़ुश है, नहीं तो दुखि।

आज के इंसान की ख़ुशी केवल सांसारिक इच्छाओं पर ही निर्भर करती है। आज की आवश्यकताएँ, आज का आराम, आज की इज़्ज़त, आज के ही अवसरों को प्राप्त कर लेने का नाम लोगों की दृष्टि में सफलता है और इनको प्राप्त न कर पाने की स्थिति का नाम असफलता। यही वह चीज़ है, जिसके लिए सारा इंसानी क़ाफ़िला आगे बढ़ा चला जा रहा है। किसी भी आदमी को आने वाले समय की चिंता नहीं है। हर आदमी बस आज की धुन में दीवाना हो रहा है।

यह समस्या केवल बड़े-बड़े नगरों की ही नहीं है, बल्कि जहाँ भी चंद लोग रहते हैं, उन सबकी हालत भी ऐसी ही है। आज जिस किसी पर भी नज़र डालें, चाहे वह पुरुष हो या महिला, अमीर हो या ग़रीब, बूढ़ा हो या जवान, शिक्षित हो या अशिक्षित, शहरी हो या देहाती, यहाँ तक कि धार्मिक हो या अधार्मिक— सब एक ही दिशा की ओर चले जा रहे हैं।

आज इंसान की सबसे बड़ी इच्छा यही है कि वह संसार में जितना कुछ प्राप्त कर सकता है, प्राप्त कर ले। इसी को वह अपने लिए आवश्यक कार्य समझता है और इसी की पूर्ति के लिए अपना मूल्यवान समय और विशिष्ट योग्यताओं को उपयोग में लाता है

और रात-दिन इसी की चिंता में लगा रहता है। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि अगर ईमान [3] और ज़मीर [4] को बलिदान करके यह चीज़ मिले तो वह अपना ज़मीर और ईमान भी इस देवी पर बलिदान करने के लिए तत्पर रहेगा। वह संसार को प्राप्त करना चाहता है, फिर चाहे वह कोई भी रास्ता अपनाने से प्राप्त हो।

हालाँकि इस प्रकार की हर सफलता केवल सांसारिक सफलता है और परलोक में वह बिल्कुल काम नहीं आ सकती। जो इंसान केवल अपने जीवन को सँवारने की चिंता में है और परलोक की ओर से लापरवाह है, उसका उदाहरण उस इंसान की तरह है, जो अपनी जवानी में अपने बुढ़ापे के लिए संग्रह नहीं करता। यहाँ तक कि जब उसकी हिम्मत जवाब दे जाती है और कार्य न करने पर मजबूर करती है तो उसको पता चलता है कि अब उसका कोई ठिकाना नहीं रहा।

वह देखता है कि मेरे पास मकान नहीं है, लेकिन वह अपना मकान नहीं बना सकता। वह देखता है कि सर्दी-गर्मी से बचने के लिए उसके पास कपड़े आदि भी नहीं हैं, लेकिन उसमें इतनी हिम्मत नहीं होती कि वह अपने लिए मकान, खाने-पीने और कपड़े आदि के लिए ये सारे साधन जुटा सके तो वह बहुत निराश और उदास होकर किसी पुरानी दीवार के नीचे चिथड़ों में लिपटा हताश पड़ा

---

[3] सत्य, न्याय और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा, धर्म एवं ईश्वर पर दृढ़ विश्वास

[4] अंतरात्मा, विवेक

रहता है। इसका परिणाम यह निकलता है कि उस पर कुत्ते भौंकते हैं, बच्चे पत्थर मारते हैं और हर आदमी उस पर उँगली उठाता है।

आए दिन हम अपनी आँखों के सामने इस प्रकार के दृश्य देखते रहते हैं, जिससे एक हल्का-सा अनुमान यह हो सकता है कि परलोक की कमाई न करने वालों के लिए परलोक का जीवन कैसा होगा। इसके बाद भी हमारे अंदर कोई खलबली पैदा नहीं होती, फिर भी हम केवल आज की उधेड़बुन में व्यस्त हैं और कल की कोई चिंता नहीं करते।

लड़ाई के दौरान जब हवाई हमले का सायरन बजता है और अपनी डरावनी आवाज़ में यह घोषणा करता है कि दुश्मन के हवाई जहाज़ आग की बारिश करने के लिए बमों को लिये हुए चले आ रहे हैं और कुछ ही पलों में सारा शहर आग और धुएँ की चपेट में आ जाएगा, तो इतना सुनते ही एकाएक तनिक देर किए बिना ही हर आदमी तुरंत निकट के सुरक्षित स्थानों की ओर दौड़ पड़ता है और पल भर में ही बहुत आबाद रहने वाली सड़कें बिल्कुल सुनसान हो जाती हैं। जो इंसान ऐसा न करे, उसके लिए यह कहा जाएगा कि वह पागल है या उसकी दिमाग़ी हालत ठीक नहीं है।

यह तो छोटे-मोटे सांसारिक ख़तरे हैं, जबकि इससे भी कहीं अधिक बड़ा ख़तरा एक और है जिसके बारे में ब्रह्मांड के रचयिता की ओर से चेताया गया है। ईश्वर ने अपने संदेष्टाओं (Prophets) के माध्यम से यह संदेश भेजे हैं कि ऐ लोगो! मेरी इबादत करो। एक-दूसरे

के प्रति जो ज़िम्मेदारी है, उसे पूरा करो और मेरे आदेश के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करो। जो ऐसा नहीं करेगा, मैं उसको कठोर दंड दूँगा जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता। यह एक ऐसा अविरल (Continous) दंड होगा, जिसमें वह सदैव तड़पता रहेगा और उससे निकल न सकेगा।

इस घोषणा को हर कान ने सुना है और हर ज़ुबान किसी-न-किसी रूप में इसको स्वीकार भी करती है, लेकिन लोगों की हालत देखिए तो ऐसा प्रतीत होगा कि जैसे यह कोई बात ही नहीं है। सांसारिक लाभों को प्राप्त करने के लिए इंसान वह सब कार्य कर रहा है, जो उसे बिल्कुल नहीं करने चाहिए, लेकिन देखा जाए तो लोगों का क़ाफ़िला बहुत तेज़ी से उस रास्ते पर चला जा रहा है, जिधर जाने से उसे रोका गया है।

जब फ़ौजी हैडक़्वार्टर का सायरन बजता है तो सभी लोग अपनी सुरक्षा के लिए तुरंत दौड़ पड़ते हैं, जबकि ईश्वर की ओर से जिस ख़तरे की घोषणा की गई है, उससे किसी को भी कोई समस्या नहीं होती। लोग उस चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं देते। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि फ़ौजी हैडक़्वार्टर का सायरन जिस ख़तरे की घोषणा करता है, उसका संबंध आज के संसार से है जिसे आदमी स्वयं अपनी आँखों से देखता है और उसके परिणाम को तुरंत अनुभव कर लेता है, जबकि ईश्वर की ओर से जिस ख़तरे के बारे में सतर्क किया गया है, वह मरने के बाद हमारे सामने आएगा।

हमारे और उसके बीच खड़ी मृत्यु की दीवार को हम अपनी आँखों से नहीं देख पाते और न ही उसके हवाई जहाज़ों, बमों व उसकी आग और धुएँ की बारिश का अनुमान लगा पाते हैं, क्योंकि यह सब कुछ अदृश्य (Invisible) है।

हमले के सायरन का तो लोग तुरंत ही विश्वास कर लेते हैं, लेकिन ईश्वरीय प्रकोप की सूचना मिलने के बाद भी हमारी अंतरात्मा में कोई उथल-पुथल नहीं मचती और कोई ऐसा विश्वास पैदा नहीं होता, जो कर्म के लिए बेचैन कर दे।

एक बात यह भी गहराई से सोचने वाली है कि चीज़ों को देखने के लिए ईश्वर ने केवल हमें दो ही आँखें नहीं दी हैं, बल्कि इसके अलावा भी हमारे पास एक और आँख है, जो बहुत दूर तक और छुपी हुई वास्तविकता को भी देख सकती है। यह तीसरी आँख है— बुद्धिनेत्र। इसे लोगों की नासमझी कह लीजिए या अविश्वास कि वे इस तीसरी आँख का सही इस्तेमाल नहीं करते। वे सामने जो कुछ भी देखते हैं, बस यही समझते हैं कि यही सच है। हालाँकि अगर मस्तिष्क से सोच-समझकर कार्य किया जाए तो पता चलेगा कि जो चीज़ हमारी आँखों के सामने है, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण वह अदृश्य चीज़ है, जो कि हमारी आँखों के सामने नहीं है।

अगर यह प्रश्न किया जाए कि इस संसार में सबसे बड़ी वास्तविकता कौन-सी है, जिससे सारी मानवजाति सहमत है तो

सबका एक ही उत्तर होगा— मृत्यु। मृत्यु ही एक ऐसी वास्तविकता है, जिसे हर इंसान स्वीकार करता है। हममें से हर आदमी जानता है कि किसी भी समय उसकी मृत्यु हो सकती है, लेकिन जब वह मृत्यु की कल्पना करता है तो वह इतना ही सोचता है कि मेरे मरने के बाद मेरे बच्चों का क्या होगा। जबकि मरने से पहले तो केवल वह अपने जीवन के बारे में चिंतित रहता है।

बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए वह अपना संपूर्ण जीवन लगा देता है, पर जो भविष्य उसके सामने आने वाला है, उसको सुधारने के लिए वह कोई प्रयास नहीं करता। जैसाकि उसके सामने मरने के बाद केवल उसके बच्चों का अस्तित्व शेष रहेगा, स्वयं उसका कुछ नहीं, जिसके लिए उसे तैयारी करने की आवश्यकता हो।

लोगों की इस प्रकार की सोच से यह पता चलता है कि शायद उन्हें इस बारे में पता नहीं है कि मृत्यु के पश्चात भी एक और जीवन है, जबकि वास्तविक जीवन मृत्यु के पश्चात ही आरंभ होता है। अगर उन्हें इस बात का विश्वास होता कि मरकर जब वे क़ब्र में दफ़न होते हैं तो वे सच में दफ़न नहीं होते, बल्कि एक दूसरे संसार में भेज दिए जाते हैं। तब वे बच्चों के भविष्य के बारे में चिंतित होने से पहले यह सोचते कि मरने के बाद मेरा परिणाम क्या होगा। वास्तविकता यह है कि संसार के अधिकतर लोग, चाहे वे धार्मिक हों या अधार्मिक, इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि मरने के बाद वे एक नया जीवन प्राप्त

कर सकते हैं। एक ऐसा जीवन जो वर्तमान जीवन से अधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है।

मृत्यु के पश्चात आने वाले जीवन के बारे में संदेह दो कारणों से पैदा होता है। एक यह कि हर इंसान जब मरकर मिट्टी में मिल जाता है तो हमारी समझ में यह नहीं आता कि वह दोबारा किस प्रकार जीवन पाएगा और दूसरा कारण यह कि मृत्यु के पश्चात का संसार हमें दिखाई नहीं देता। आज के संसार को तो हर आदमी अपनी आँखों से देख रहा है, जबकि उसके पश्चात के संसार को अब तक किसी ने नहीं देखा है। इसलिए हमें विश्वास नहीं होता कि इस जीवन के पश्चात भी कोई दूसरा जीवन हो सकता है। आइए, अब इन्हीं दोनों सवालों पर विचार करते हैं।

मृत्यु के पश्चात का जीवन

'जब मैं मरकर मिट्टी हो जाऊँगा तो क्या मुझे फिर से जीवित किया जाएगा?' इस प्रश्न को एकाग्रचित्त होकर बहुत कम लोग सोचते हैं, लेकिन वह आदमी जो इस बात पर विश्वास नहीं रखता कि मरने के बाद उसे एक नए जीवन से सामना करने का अवसर मिलने वाला है— उसके मन-मस्तिष्क में यह प्रश्न बना रहता है— जो आदमी अपने आज के जीवन में कल के आने वाले जीवन के लिए चिंतित नहीं है। इसके फलस्वरूप वह इस बात का प्रमाण प्रस्तुत कर

रहा है कि वह कल के जीवन के बारे में शंकित है— चाहे वह इस बारे में सोचता है या नहीं।

अगर हम गंभीरता से इस बारे में सोचें तो बड़ी आसानी से इसकी वास्तविकता को समझ सकते हैं। हालाँकि ईश्वर ने मृत्यु के पश्चात आने वाली वास्तविकता को हमारी आँखों से ओझल कर दिया है, क्योंकि वह हमारी परीक्षा ले रहा है। फिर भी ब्रह्मांड में ईश्वर ने इतनी अनगिनत निशानियाँ फैला दी हैं, जिन पर हम सोच-विचार करके सारी वास्तविकता को समझ सकते हैं। यह संसार एक दर्पण की तरह है, जिसमें हमें दूसरे संसार का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

आप जानते हैं कि इंसान वर्तमान रूप में पेहले दिन से विद्यमान नहीं है। इंसान की उत्पत्ति एक अपवित्र, रूपहीन और सूक्ष्म शुक्राणु से होती है, जो माँ के गर्भ में बढ़कर इंसानी रूप धारण कर लेता है और फिर बाहर आकर विकास करके पूरा इंसान बन जाता है। एक अपवित्र शुक्राणु तत्व तो इतना सूक्ष्म होता है कि आँखों से नहीं देखा जा सकता और फिर उसका बढ़कर 6 फुट का एक लंबा इंसान बन जाना एक ऐसी घटना है, जो प्रतिदिन इस संसार में घटित होती है। फिर इस वास्तविकता को स्वीकार करने में आपको क्या कठिनाई होती है कि हमारे शरीर के विभिन्न भाग जो बहुत ही सूक्ष्म कण बनकर बिखर जाएँगे तो दोबारा पूरे इंसान का रूप धारण नहीं कर सकते हैं।

हर एक इंसान जिसको आप चलता-फिरता देखते हैं, वह वास्तव में इंसान के रूप में असंख्य परमाणु हैं, जो पहले हमारी धरती और वातावरण के अंदर बहुत दूर तक फैले हुए थे। फिर हवा, पानी और पोषक पदार्थों के सहयोग से उन परमाणुओं को एक इंसानी अस्तित्व में एकत्रित किया गया और अब हम इन्हीं फैले हुए अणुओं के समूह को एक चलते-फिरते इंसान के रूप में देख रहे हैं, यही क्रम दोबारा होगा।

हमारे मरने के बाद हमारे जीवन के अंश पानी और हवा सब धरती पर बिखर जाएँगे और जब ईश्वर का आदेश होगा तो वह इसी प्रकार फिर से जमा होकर एक अस्तित्व के रूप में उपस्थित हो जाएँगे, जिस प्रकार वे पहले एकत्रित हुए थे। एक घटना जो हो चुकी है, वही अगर फिर से दोहराई जाए तो इसमें हैरानी की कौन-सी बात है।

फिर भौतिक सृष्टि में ऐसे बहुत-से उदाहरण विद्यमान हैं, जो इस वास्तविकता की ओर संकेत करते हैं कि जीवन को फिर से रूप धारण करना पड़ेगा। जैसे हर साल हम बरसात में देखते हैं कि धरती में पेड़-पौधे उगते हैं और चारों ओर का वातावरण हरा-भरा हो जाता है। फिर गर्मी का मौसम उनके लिए मृत्यु का संदेश बनकर आता है और वही हरी-भरी धरती शुष्क हो जाती है। जहाँ हरियाली लहलहा रही थी, वहाँ ख़ाली मैदान दिखाई देने लगता है।

इस प्रकार एक जीवन पैदा होकर समाप्त हो जाता है, लेकिन जब फिर से बरसात का मौसम आता है और आसमान से बारिश होती है तो वही मरे ,सूखे हुए पेड़-पौधे फिर से जी उठते हैं। शुष्क धरती फिर से लहलहा उठती है और हरी-भरी दिखाई देने लगती है। बस इसी प्रकार इंसान भी मरने के बाद जीवित किए जाएँगे।

एक और पहलू से इस बात को समझा जा सकता है कि मृत्यु के पश्चात जीवन के बारे में संदेह इसलिए पैदा होता है कि बाह्य रूप से जो एक चलता-फिरता शरीर दिखाई देता है, वही एक असली इंसान है। जब यह शरीर सड़-गल जाएगा और उसका हर हिस्सा मिट्टी में मिल चुका होगा तो उसे फिर से किस प्रकार एकत्र करके खड़ा किया जा सकता है।

जब हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक जीवित प्राणी की मृत्यु हो जाती है तो वह शांत हो जाता है। उसके शरीर की हर गतिविधि रुक जाती है और उसकी सारी योग्यता और शक्ति समाप्त हो जाती है तो फिर उसे धरती के नीचे मिट्टी में दबा दिया जाता है या दूसरी जातियों के रीति-रिवाजों के अनुसार जलाकर नदी में बहा दिया जाता है। कुछ समय के बाद वह कण-कण होकर इस प्रकार धरती का हिस्सा बन जाता है कि फिर उसका कोई अस्तित्व हमें दिखाई नहीं देता।

एक चलते-फिरते जीवित इंसान को इस प्रकार समाप्त होते हुए हम प्रतिदिन देखते हैं, लेकिन फिर भी हमारा मस्तिष्क यह मानने के

लिए तैयार नहीं होता कि वह इंसान जो समाप्त हो चुका है, वह फिर से कैसे अपने रूप में आ जाएगा, लेकिन वास्तविक अस्तित्व यह शरीर नहीं है, जिसे हम अपने सामने चलता-फिरता देखते हैं, बल्कि वास्तविक अस्तित्व अंदरूनी इंसान है, जो आँखों से दिखाई नहीं देता, जिसका कार्य सोचना है और जो शरीर को गतिविधि में रखता है, जिसकी उपस्थिती शरीर को जीवित रखती है और जिसके निकल जाने के बाद शरीर तो शेष मात्र रह जाता है, लेकिन उसमें किसी प्रकार का जीवन शेष नहीं रह जाता।

वास्तविकता यह है कि इंसान किसी विशिष्ट शरीर का नाम नहीं है, बल्कि उस अंतरात्मा का नाम है, जो शरीर के अंदर विद्यमान है। शरीर के बारे में हमें पता है कि यह बहुत ही सूक्ष्म कणों से मिलकर बना है, जिसे हम जीवकोष कहते हैं। हमारे शरीर में जीवकोषों की वही हैसियत है, जो किसी मकान में उसकी ईंटों की होती है। हमारे शारीरिक मकान की ये ईंटें हमारी गतिविधि के दौरान बराबर टूटती रहती हैं, जिसकी पूर्ति हम भोजन के द्वारा करते हैं। भोजन पचकर विभिन्न प्रकार के जीवकोषों का निर्माण करता है, जो शरीर की टूट-फूट को पूरी तरह बराबर कर देते हैं।

इस प्रकार इंसान का शरीर लगातार घिसता और बदलता रहता है। पिछले जीवकोष टूटते हैं और नए जीवाणु उनकी जगह ले लेते हैं। इस प्रकार यह क्रिया प्रतिदिन यूँ ही चलती रहती है। यहाँ

तक कि कुछ समय पश्चात सारा-का-सारा शरीर बिल्कुल नया हो जाता है।

दूसरे शब्दों में, आपका जो शरीर दस साल पहले था, उसमें से आज कुछ भी शेष नहीं रहा। आज आपका जो शरीर है, वह नया शरीर है। दस साल की अवधि में आपके शरीर के जो अंश टूटकर अलग हुए थे, अगर उनको पूरी तरह से फिर से एकत्र किया जा सके तो बिल्कुल आपकी तरह का एक दूसरा इंसान खड़ा किया जा सकता है। यहाँ तक कि आपकी उम्र 100 साल भी हो तो भी आपकी ही तरह के लगभग दस इंसान और बनाए जा सकते हैं। ये सब इंसान सामान्य रूप से देखने में आपकी तरह ही होंगे, लेकिन वह सब-के-सब मुर्दा शरीर होंगे जिनके अंदर आप उपस्थित नहीं होंगे, क्योंकि आपने पिछले शरीर को छोड़कर एक नए शरीर का ख़ोल पहन लिया है।

इस प्रकार आपका शरीर बनता-बिगड़ता रहता है, लेकिन आपके अंदर कोई परिवर्तन नहीं होता। जिसे आप 'मैं' कहते हैं, वह ज्यों-का-त्यों रहता है। आपने अगर दस साल पहले किसी के साथ कोई समझौता किया था तो आप यह स्वीकार करते हैं कि यह समझौता मैंने ही किया था, हालाँकि अब आपका पिछला शारीरिक अस्तित्व शेष नहीं है। वह हाथ अब आपके शरीर पर नहीं है, जिसने समझौते के काग़ज़ात पर हस्ताक्षर किए थे और न ही वह ज़ुबान है, जिसने इस विषय पर बातचीत की थी, लेकिन आप अभी भी

उपस्थित हैं और स्वीकार करते हैं कि दस साल पहले जो समझौता मैंने किया था, वह मेरा ही था और अब भी मैं उसका पाबंद हूँ। यह वही अंदरूनी इंसान है, जो शरीर के साथ बदलता नहीं, बल्कि शरीर में अनेक परिवर्तन के बाद भी अपने आपको बनाए रखता है।

इससे यह प्रामाणित होता है कि इंसान किसी विशिष्ट शरीर का नाम नहीं है, जिसके समाप्त हो जाने से वह समाप्त हो जाए, बल्कि वह तो एक ऐसी आत्मा है, जो शरीर से अलग अपना अस्तित्व रखती है। जबकि शरीर के अंशों के बिखर जाने के बाद भी वह वैसे ही रहती है। इस प्रकार शरीर में परिवर्तन और आत्मा में अपरिवर्तन इस वास्तविकता की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है।

कुछ नादान लोगों के अनुसार कुछ भौतिक तत्वों के एकीकरण और बिखर जाने का नाम ही जीवन और मृत्यु है। इन तत्वों के मिलने से जीवन का निर्माण होता है और अलग हो जाने से मृत्यु का आगमन। चकबस्त ने इन तथ्यों की व्याख्या इन शब्दों में की है—

ज़िंदगी क्या है अनासिर में ज़हूरे-तरतीब,
मौत क्या है उन्हीं अज्ज़ा का परेशाँ होना।

लेकिन यह एक ऐसी व्याख्या है, जिसका ज्ञान से कोई संबंध नहीं है। अगर जीवन केवल तत्वों के एकीकरण का नाम है तो उसको उस समय तक विद्यमान रहना चाहिए, जब तक तत्वों का क्रम विद्यमान है और यह तभी संभव होना चाहिए कि कोई

बुद्धिमान वैज्ञानिक इन तत्वों को एकत्र करके उनको जीवन प्रदान कर सके, लेकिन हम जानते हैं कि यह दोनों बातें असंभव हैं।

हम देखते हैं कि मरने वालों में केवल वही आदमी नहीं हैं, जिनके साथ कोई दुर्घटना हुई हो, जो उनके शरीर के टुकड़े कर दे, बल्कि हर स्थिति में और हर उम्र के लोग मरते हैं। कभी-कभी तो अगर अचानक किसी स्वस्थ इंसान के दिल की धड़कन रुक जाए तो फिर कोई भी ऐसा डॉक्टर नहीं, जो यह बता सके कि ऐसा क्यों हुआ।

हम देखते हैं कि मरने वाले का शरीर अपनी पहली स्थिति में है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उसके शरीर का हर हिस्सा पूरी तरह से वैसा-का-वैसा ही है, लेकिन उसके अंदर जो आत्मा थी, वह निकल चुकी है और सारे तत्व पहले की स्थिति में अब भी विद्यमान हैं, जैसे अब से कुछ मिनट पहले विद्यमान थे, लेकिन उसके अंदर जीवन नहीं है। इस घटना से स्पष्ट पता चलता है कि भौतिक तत्वों का क्रमबद्ध होना जीवन का होना नहीं है, बल्कि जीवन उससे एक अलग चीज़ है, जो अपना स्थायी अस्तित्व रखता है।

यह एक बड़ी वास्तविकता है कि किसी भी प्रयोगशाला में जीवित इंसान नहीं बनाया जा सकता है। हालाँकि शरीर का चित्रण किया जा सकता है। यह तो पता चल चुका है कि जीवित शरीर के अंग बिल्कुल साधारण प्रकार के परमाणु होते हैं। उसमें कार्बन वही

है, जो हम कालिख में देखते हैं। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन वही है, जो पानी का मूल रूप है। नाइट्रोजन वही है, जिससे वायुमंडल का अधिकतर भाग बना है। इसी प्रकार अन्य चीज़ें हैं, लेकिन क्या एक जीवित इंसान एटमों का एक विशेष समूह है, जो किसी ग़ैर-मामूली तरीक़े से आयोजित कर दिया गया है या इसके अलावा कुछ और है।

वैज्ञानिक कहते हैं कि हम यह जानते हैं कि इंसान का शरीर अमुक भौतिक तत्वों से मिलकर बना है, लेकिन भौतिक तत्वों को एकत्र करके हम जीवन पैदा नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो एक जीवित इंसान का शरीर केवल निर्जीव अणुओं का समूह नहीं है, बल्कि वह अणु (Atom) और जीवन दोनों है। मरने के बाद परमाणुओं का समूह तो हमारे सामने विद्यमान रहता है, जबकि जीवन उससे निकलकर दूसरे संसार में चला जाता है।

इस व्याख्या से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीवन मिटने वाली चीज़ नहीं है, बल्कि शेष रहने वाली चीज़ है। अब हम समझ सकते हैं कि मृत्यु के पश्चात के जीवन का दृष्टिकोण कितना आधारयुक्त व प्राकृतिक दृष्टिकोण है। यह वास्तविकता इस बात को स्पष्ट कर रही है कि जीवन केवल वही नहीं हो सकता, जो मृत्यु से पहले दिखाई देता है, बल्कि मृत्यु के पश्चात भी हमें जीवित रहना चाहिए। हमारी बुद्धि यह स्वीकार करती है कि यह संसार और उसकी आयु नश्वर है, लेकिन इंसान एक ऐसा अस्तित्व है, जो उसके

बाद भी रहता है। जब हम मरते हैं तो वास्तव में मरते नहीं, बल्कि जीवित रहने के लिए एक दूसरे संसार में प्रवेश कर जाते हैं। वर्तमान जीवन हमारी अविरल आयु का एक हिस्सा मात्र है।

दूसरा संसार

अब इस प्रश्न पर सोच-विचार कीजिए कि दूसरा जीवन कैसा होगा। ईश्वर के संदेष्टा (Prophet) कहते हैं कि वहाँ स्वर्ग और नरक है। हर आदमी जिसकी मृत्यु होती है, वह इनमें से किसी एक में भेज दिया जाता है। जो इंसान आज के संसार में ईश्वर का आज्ञाकारी होगा और उसके बताए हुए रास्ते पर चलते हुए अपना जीवन व्यतीत करेगा, उसे स्वर्ग के विश्रामालय में जगह मिलेगी और जो अवज्ञाकारी व दुश्चरित्र होगा, उसे नरक की यातनाएँ झेलनी पड़ेंगी।

इस बात को समझने के लिए इस सच्चाई पर ध्यान देना होगा कि इंसान जो भी कार्य करता है, उसके दो पहलू होते हैं। कुछ कार्य और घटनाएँ ऐसी होती हैं, जो साधारणतः अनजाने में हो जाती हैं और दूसरी वह, जो किसी विशेष प्रयोजन (Intent) से की जाएँ। पहले पहलू को स्वाभाविक और दूसरे को शिष्टाचार संबंधी कहेंगे यानी जो प्रयोजन से किया गया हो।

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी—

अगर पेड़ पर कोई पत्थर अटका हुआ हो और आप उसके नीचे से गुज़र रहे हों, फिर अचानक वह पत्थर आपके ऊपर गिर पड़े और आपका सिर फूट जाए तो इस स्थिति में आप उस पेड़ से झगड़ा नहीं करेंगे, बल्कि शांति से अपना सिर पकड़े हुए घर चले जाएँगे। इसके विपरीत अगर कोई आदमी जानबूझकर आपको पत्थर मारे, जिससे आप घायल हो जाएँ तो आप उस पर बरस पड़ेंगे और चाहेंगे कि आप भी उसका सिर तोड़ डालें, जिस प्रकार उसने आपको चोट पहुँचाई है।

पेड़ और इंसान में यह अंतर क्यों है? क्यों आप पेड़ से बदला नहीं लेते और इंसान से बदला लेना चाहते हैं? इसका कारण केवल यह है कि पेड़ में सोचने-विचारने की शक्ति नहीं है, जबकि यह शक्ति इंसान के पास है। इस प्रकार पेड़ का व्यवहार केवल घटनात्मक प्रकृति का है, जबकि इंसान का घटनात्मक और शिष्टाचारी दोनों है।

इससे पता चलता है कि इंसान के व्यवहार करने के दो पहलू हैं। एक यह कि उसके कारण कोई घटना घटी और दूसरा यह कि वह कार्य सही था या ग़लत, सही तरीक़े से किया गया था या ग़लत तरीक़े से, उसको करना चाहिए था या नहीं। जहाँ तक उसके कार्य के पहले पहलू का संबंध है तो उसका परिणाम तुरंत इसी संसार में सामने आ जाता है, लेकिन दूसरे पहलू का परिणाम इस संसार में सामने नहीं आता और अगर कभी आता भी है तो बहुत साधारण रूप में।

जिस आदमी ने आपको पत्थर मारा, उसके कार्य का यह परिणाम तो तुरंत ही प्रकट हो गया कि आपका सिर फूट गया, लेकिन उसके कर्म का दूसरा पहलू कि उसने अपनी शक्ति का ग़लत प्रयोग किया, उसका परिणाम प्रकट होना आवश्यक नहीं है। उसने चाहा था कि सिर फोड़े तो सिर फूट गया। उसने चाहा था कि एक ग़लत कार्य करे, लेकिन उसके इस दूसरे प्रयोजन का कोई परिणाम हमारे सामने नहीं आया। परिणाम नाम है इंसानी इरादे का बाहर प्रकट हो जाना। हम देखते हैं कि इंसानी इरादे का एक परिणाम— घटनात्मक परिणाम— सदैव प्रकट हो जाता है और फिर इंसानी इरादे का दूसरा परिणाम— शिष्टाचारी परिणाम— भी अवश्य प्रकट होना चाहिए।

परलोक इंसान द्वारा किए गए कार्यों के इसी दूसरे पहलू के परिणाम प्रकट होने की जगह है। जिस प्रकार आदमी के द्वारा किए गए कार्यों का पहलू कुछ घटनाओं को सामने दिखाता है, उसी प्रकार उसके व्यवहार का दूसरा पहलू कुछ दूसरी तरह की घटनाओं को पैदा करता है। अंतर केवल यह है कि पहली तरह की घटना को हम इसी संसार में अपनी आँखों से देख लेते हैं और दूसरी तरह की घटनाओं को हम मृत्यु के पश्चात देखेंगे।

हर आदमी जो इस संसार में अपना जीवन जी रहा है, वह अपने कार्यों से अपने लिए कोई-न-कोई परिणाम पैदा करने में व्यस्त है। चाहे वह बेकार बैठा हो या किसी कार्य में लगा हुआ हो, उसकी हर

एक स्थिति उसके लिए एक अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिकृया पैदा करती है। उसकी आदत और आचरण से लोग उसके बारे में एक दृष्टिकोण बना लेते हैं कि वह अपनी योग्यता का जिस प्रकार प्रयोग करता है, उसी के अनुसार उसके कार्य बनते या बिगड़ते हैं और वह अपने प्रयासों को जिस दिशा में लगाता है, उसी दिशा की चीज़ों पर उसका अधिकार स्थापित होता है।

इस प्रकार हर इंसान अपने चारों ओर अपना ही एक संसार बना रहा है, जो बिल्कुल उसके कार्यों के अनुसार है। यह आदमी के कर्म का एक पहलू है, जो वर्तमान संसार से संबंधित है। इसी प्रकार उसके कार्य की दूसरी वास्ताविक्ता सही या ग़लत कुछ भी हो, अपना एक परिणाम पैदा करती है । वह परिणाम दूसरे संसार में पैदा हो रहे हैं।

हमारे कर्म का शिष्टचारी पहलू पूरी तरह से अपने परिणाम को बना रहा है और उसी का नाम धार्मिक भाषा में स्वर्ग और नरक है। हममें से हर आदमी हर पल अपने लिए स्वर्ग और नरक का निर्माण कर रहा है। चूँकि इस संसार में इंसान को परीक्षा के प्रयोजन से ठहराया गया है, इसलिए स्वर्ग और नरक को उसकी दृष्टि से ओझल रखा गया है। जब परीक्षा का समय समाप्त हो जाएगा और क़यामत आएगी तो हर आदमी अपने बनाए हुए संसार में पहुँचा दिया जाएगा।

यहाँ एक प्रश्न यह पैदा होता है कि अगर हमारे किए हुए कार्यों का कोई शिष्टाचारी परिणाम है तो हमें वह दिखाई क्यों नहीं देता।

उदाहरण के तौर पर— मकान बनाना एक कार्य है, जिसका एक परिणाम यह है कि मकान बनकर तैयार हो जाए। यह परिणाम प्रकट होता है और उसे हम अपनी आँखों से देखते हैं, लेकिन इस कर्म का पहलू यह है कि यह उचित तरीक़े से बनाया गया है या अनुचित तरीक़े से। यह भी अगर कोई परिणाम पैदा करता है तो वह कहाँ है? क्या ऐसा भी कोई परिणाम है, जिसे देखा और छुआ न जा सकता हो?

इस प्रश्न का उत्तर कर्म की इन दोनों हैसियतों में उपस्थित है। कर्म का जो घटनात्मक पहलू है, उसे हर आदमी देखता है। यहाँ तक कि कैमरे की निर्जीव आँख भी स्पष्ट रूप से देख लेती है, लेकिन किसी कर्म का शिष्टाचारी पहलू दिखाई देने वाली चीज़ नहीं है, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता।

कर्म के दोनों पहलुओं का यह अंतर स्वयं संकेत कर रहा है कि दोनों के परिणाम किस प्रकार सामने आते हैं। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि कर्म की पहली हैसियत का परिणाम इसी संसार में नज़र आना चाहिए, जिसे हम अपनी आंखो से देख रहे हैं और कर्म की दूसरी हैसियत का परिणाम उस संसार में नज़र आएगा, जो हमारी आँखों से ओझल है। इसलिए जो कुछ भी है, यही दरअसल होना भी चाहिए था।

केवल यही बौद्धिक तौर पर खरी उतरने वाली बात नहीं है, बल्कि प्रकृति का नियम और क्रम हमें यह बताता है कि यहाँ दोनों

प्रकार के परिणाम पाए जाते हैं। एक ऐसे भी, जिन्हें हम घटित होने के बाद जल्दी ही देख लें और दूसरे ऐसे भी हैं, जो हमारी आँखों को दिखाई नहीं देते, वह एक सच्चाई के रूप में अवश्य विद्यमान रहते हैं। ब्रह्मांड में ऐसे छुपे हुए परिणामों का विद्यमान होना स्पष्ट रूप से यह प्रकट करता है कि इसी प्रकार के दूसरे छुपे हुए परिणाम भी हो सकते हैं। ब्रह्मांड की बनावट अपने अंदर ऐसे ही परिणामों के होने को स्वीकार करती है।

उदाहरण के तौर पर— आवाज़ को ही लीजिए, आप यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि आवाज़ नाम है ऐसी तरंगों का, जिन्हें आँखों के माध्यम से नहीं देखा जा सकता। जब बोलने के लिए ज़ुबान से गतिविधि की जाती है तो उसकी गतिविधि से हवा में कुछ लहरें पैदा होती हैं। इन्हीं लहरों को हम आवाज़ कहते हैं।

आवाज़ एक प्रकार का अदृश्य चिह्न है, जो हमारी ज़ुबान के हिलने से हवा में पैदा होता है। जब भी कोई आदमी बोलता है तो उसकी आवाज़ लहरों के रूप में छप जाती है और सदैव के लिए शेष रहती है। यहाँ तक कि वैज्ञानिकों का विचार है कि अब से हज़ारों साल पहले किसी इंसान ने जो आवाज़ अपने मुँह से निकाली थी या जो भी बातचीत की थी, वह सब-का-सब अंदर तरंगों के रूप में विद्यमान है। हालाँकि आज हम उन आवाज़ों को नहीं देखते और न ही सुनते हैं, लेकिन अगर हमारे पास उनको पकड़ने वाले यंत्र हों

तो किसी भी समय उनको ठीक-ठीक अपने पिछले रूप में दोहराया जा सकता है।

इस उदाहरण के माध्यम से हम दूसरे संसार के कार्यों को भली-भाँति समझ सकते हैं। जिस प्रकार हमारे चारों ओर हवा का आवरण है और हमारी हर आवाज़ मुँह से निकलते ही उस पर अंकित हो जाती है, जबकि न तो हम हवा को देखते हैं और न ही अपनी आवाज़ के निशानों को। ठीक उसी प्रकार संसार भी हमें चारों ओर से घेरे हुए है और हमारे संकल्प और प्रयोजनों को लगातार रिकॉर्ड करता जा रहा है। उसके परदे पर हमारे कार्यों के निशान अंकित हो रहे हैं, जो मृत्यु के पश्चात प्रकट हो जाएँगे।

अगर ग्रामोफ़ोन में चाबी भरी हुई हो और रिकॉर्ड उसके ऊपर घूम रहा हो तो सूई के रखते ही रिकॉर्ड की शांत तख़्ती अचानक इस प्रकार बोल पड़ती है, जैसे वह इसी की प्रतीक्षा में थी कि कब कोई उसके ऊपर सूई रखे और तब वह अपने अंदर की आवाज़ को निकालना आरंभ कर दे। इसी प्रकार सभी कार्यों के परिणाम का रिकॉर्ड तैयार हो रहा है और ब्रह्मांड के मालिक के आदेश के अनुसार रिकॉर्ड इस प्रकार हमारे सामने आ जाएगा कि उसे देखकर आदमी कह उठेगा—

“यह कैसी किताब है कि मेरा छोटा-बड़ा कोई कार्य ऐसा नहीं, जो उसने सुरक्षित न कर लिया हो।” (क़ुरआन 18:49)

अंतिम शब्द

ऊपर जो कुछ मैंने वर्णन किया है, अब अंत में एक बार फिर उसको अपने मन-मस्तिष्क में दोहरा लीजिए— आपका जीवन एक बहुत बड़ा और निरंतर जीवन है। मृत्यु इस जीवन की अंतिम सीमा नहीं है, बल्कि दूसरे दौर का प्रारंभ है। मृत्यु हमारे जीवन की दो स्थितियों के बीच एक विभाजित रेखा है। इसे उदाहरण के तौर पर यूँ समझिए कि किसान एक फ़सल बोता है और उस पर अपनी मेहनत और पैसा लगाता है। यहाँ तक कि जब फ़सल पककर और तैयार होकर सूख जाती है तो वह उस समय उसे काट लेता है, ताकि उससे अनाज प्राप्त करके अपनी साल भर की रो ी-रोटी की व्यवस्था कर ले।

फ़सल का काटना, फ़सल के दौर का अंत होना और दूसरे दौर का आरंभ होना है। इसके पहले बोना और फ़सल को तैयार करना था। उसके बाद फल प्राप्त करना और उससे अपनी आवश्यकताएँ पूरी करना है। फ़सल के काटने से पहले केवल मेहनत करना और ख़र्च करना था, जबकि फ़सल काटने के बाद केवल अपनी मेहनत का फल पाना और लाभ उठाना है। ठीक यही हाल हमारे जीवन का भी है।

हम इस संसार में अपने परलोक की फसल तैयार कर रहे हैं। हममें से हर इंसान परलोक में अपना एक खेत रखता है, जिसमें वह या तो खेती कर रहा है या उसे ख़ाली छोड़े हुए है। उसने इसमें ख़राब बीजों का इस्तेमाल किया है या अच्छे बीजों का, उसने बीज बोकर छोड़ दिया है या वह बीज डालने के बाद सही निगरानी कर रहा है, उसने काँटों की फ़सल बोई है या फल-फूल उगाए हैं, उसने अपने

सभी प्रयासों को उस खेती को सबसे बढ़िया बनाने में लगा दिया है या वैभवपूर्ण जीवन जीने में अपना समय गँवा दिया है। इस फ़सल की तैयारी की अवधि उस समय तक है, जब तक हमें मृत्यु नहीं आ जाती है। मृत्यु परलोक की फ़सल काटने का दिन है। जब इस संसार में हमारी आँखें बंद होंगी और दूसरे संसार में खुलेंगी तो वहाँ हमारी उम्र भर की तैयार की हुई खेती हमारे सामने होगी।

यह बात याद रखिए की फ़सल काटने के दिन फ़सल वही काटता है, जिसने काटने से पहले खेती की हो और वही चीज़ काटता है, जो उसने अपने खेत में बोई थी। इस प्रकार परलोक में हर आदमी को वही फ़सल मिलेगी, जो उसने मृत्यु से पहले तैयार की है। हर किसान जानता है कि उसके घर में उतना ही अनाज आएगा, जितनी उसने मेहनत की है और वही चीज़ आएगी, जो उसने बोई थी। इसी प्रकार परलोक में भी आदमी को उसके किए के अनुसार मिलेगा। उसे वही मिलेगा, जिसके लिए उसने जितनी मेहनत की होगी।

मृत्यु किए हुए कार्यों के समाप्त होने की अंतिम घोषणा है और परलोक अपने प्रयासों का फल पाने की अंतिम जगह। मृत्यु के पश्चात न दोबारा प्रयास करने का अवसर है और न ही परलोक कभी समाप्त होने वाला है।

कितनी गंभीर है यह घटना! काश! इंसान मृत्यु से पहले इस सच को समझ ले, क्योंकि मृत्यु के पश्चात पछतावा करना कुछ भी काम न आएगा। मृत्यु के पश्चात होशियार होने का अर्थ केवल यही है

कि आदमी केवल इस बात पर पछतावा करे कि बीते हुए समय में उसने कितनी बड़ी भूल की है। एक ऐसी भूल, जिसको सुधारने की कोई गुंजाइश नहीं है।

इंसान अपने परिणाम से अपरिचित है। हालाँकि ज़माना उसको बहुत तेज़ी से उस समय की ओर लिये जा रहा है, जब फ़सल काटने का समय आ जाएगा। जबकि वह सांसारिक लाभों को प्राप्त करने में व्यस्त है और समझता है कि मैं सही कार्य कर रहा हूँ।

दरअसल वह अपने मूल्यवान समय को बेकार यूँ ही गँवा रहा है, हालाँकि उसके सामने एक बहुत ही बढ़िया अवसर है जिसमें वह अच्छे कार्य करके अपने लिए एक अनोखे भविष्य का निर्माण कर सकता है, लेकिन वह तो कंकरियों से खेल रहा है, जबकि उसका ईश्वर उसको अपने स्वर्ग की ओर बुला रहा है, जो सदैव के लिए बना रहने वाला, आराम और सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण है, लेकिन वह तो चंद दिनों की झूठी आरामतलबी[5] में खोया हुआ है।

वह समझता है कि मैं बहुत कुछ प्राप्त कर रहा हूँ, हालाँकि वास्तविकता यह है कि वह केवल गँवा ही रहा है। संसार में मकान बनाकर वह समझता है कि मैं अपने जीवन का निर्माण कर रहा हूँ, जबकि वह केवल रेत की दीवार उठा रहा है, जो इसलिए बनती है कि बनने के बाद ढह जाए।

ऐ इंसान! अपने आपको पहचान कि तू क्या कर रहा है और तुझे क्या करना चाहिए।

---

[5] आलस्य, काम से जी चुराना

आज के इंसान की प्रसन्नता केवल सांसारिक इच्छाओं पर ही निर्भर करती है। आज की आवश्यकताएँ, आज का आराम, आज की इज़्ज़त, आज के ही अवसरों को प्राप्त कर लेने का नाम लोगों की दृष्टि में सफलता है और इनको प्राप्त न कर पाने की स्थिति का नाम असफलता। यही वह चीज़ है, जिसके लिए सारा इंसानी क़ाफ़िला आगे बढ़ा चला जा रहा है। किसी भी आदमी को आने वाले समय की चिंता नहीं है। हर आदमी बस आज की धुन में दीवाना हो रहा है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-शांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

Buy

ISBN 978-93-86589-36-1

9 789386 589361

Goodword Books
CPS International